प्राचीन मड देव लोकसँ धरती आयल छल गन्धर्व श्रीकृष्णक चरण स्पर्शसँ शाप मुक्त भऽ गेला ओहि छकडक जीवन समाप्त भऽ गेला पर ओ स्वर्ग पड़ला।

"खसल महानन्द हँसल मुरारि।
भेल अधान जगत परचारि॥
आँगन सुन देखि नयन नोराइल।
जसोमति कौं हिअ हाथ हेराइल॥
कीयल भेल कोहि छनक अगोरि।
न हरि उखरि नहि ओ डोरि॥"

ओतहि शिशु कृष्ण छथि खसल पर भगा-भगाक हँसय लगलाह छथि खसैत लोक सभ देखलक, ओकरा सभके शंका भेलैक जे कोनो पैघ अधान भेल। एम्हर यशोदा जखन आँगन मे पुत्र के नहि देखलन्हि। ओम्हर गाछ खसबाक भयंकर आवाजसँ यशोदा दौड़ल द्वार पर अएलीह। आवाज सुनि यशोदा सोचलनि कहिकल भेल हमरा छनक अगोरि कए न हरि छथि जे उखरि अछि ओ न ओ डोरि अछि।

"कतहु जसोमति पहुँचलि जाइ।
नेरु हेरइत जेहन गाय॥
नन्दक बालक सुनि दौड़ल नन्द।
नोनि देल गाय परओ आनन्द॥
की नन्दक खसल धसान न भएल।
आज देखैत मोर धारइ धार॥"

कतेक भाग यशोदा। एम्हर ओम्हर देखय लगलीह जेना गाय क बच्चा

देखि गेला पर यशोदा केर आकुल व्याकुल अछि ओहि हाल यशोदाक छल। गाइ रंभएबाक नेपथ्य ध्वनि सँ गाय चरबैत नन्द घर दिस घुरलाह। एना लइ गाइक वत्सल हृदय सँ चाहि, ने दुध-पिआइ आकुल नयन वत्सल कोना? नन्द बाबाकेँ कोनो अलौकिक शंका होमय लगलन्हि।

"जसोमति क्रोड हरि हृदय लगाओल।
हरि मनोहर पयपी पाओल॥
अञ्चल झाँपि नयन भरि गेलि।
नयन बरसि जलधर नहि गेलि॥
आनन चुम्बि पयोधर धएल।
सबहु आशिष मिलि मंगल कएल॥
मन मनबोध हरि अपन गेयान।
कहलन्हि बाल गोपाल ध्यान॥"
माय जसोदा कृष्णकेँ हेरि

जान पलटलाना कृष्णक अपन हृदय सँ लगाओल। श्रीकृष्ण सेहो हुनक नेनाहं आँचर में झाँपि कें कृष्णक अपन घर आनलनि। अलौकिक शंका सँ ओ चारि-कोर कानय लगलीह। श्रीकृष्णक मुँह कें चुमि दूध पियाबय लगलीह। सेहि विपदा सँ त्राण भेटला पर सब आशिष-बहिनपा मिलि मंगलगान करैत छथि।

महाकवि मनबोध कहैत छथि हम अपना ज्ञान सँ श्रीकृष्णक बाल लीलाक वर्णन कए रहल छी हम कृष्णक बाल रूपके अपन हृदयमे धारण कए ध्यान करैत छी सेहि रचनामे मधुर लीलाक उल्लेख भेल अछि जे प्रसाद गुणसँ भरल अछि।

डॉ. अरविन्द झा
मो. 9040201409

—x—

Scanned with CamScanner